



झारखण्ड गजट

असाधारण अंक

झारखण्ड सरकार द्वारा प्रकाशित

संख्या 499 राँची, सोमवार 21 आश्विन 1936 (श०)
13 अक्टूबर, 2014 (ई०)

कार्मिक, प्रशासनिक सुधार तथा राजभाषा विभाग

संकल्प

7 अक्टूबर, 2014

1. उपायुक्त, राँची का पत्रांक- 8/गो०, दिनांक 13 जनवरी, 2010 एवं पत्रांक-143(i) / जि०ग्रा०, दिनांक 7 मई, 2012
2. कार्मिक, प्रशासनिक सुधार तथा राजभाषा विभाग, झारखण्ड, राँची का संकल्प सं०-3442, दिनांक 11 जून, 2010, संकल्प सं०- 8582, दिनांक 30 दिसम्बर, 2011 एवं पत्रांक- 6295, दिनांक 12 जुलाई, 2013
3. विभागीय जाँच पदाधिकारी-सह-संचालन पदाधिकारी का पत्रांक-202, दिनांक 31 मई, 2013

संख्या-5/आरोप-1-506/2014 का.- 9834-- श्री परमानन्द बासिल कुमार डांग, झा०प्र०से० (कोटि क्रमांक-452/03, गृह जिला- गुमला), प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, सोनाहातु के पद पर कार्यावधि से संबंधित आरोपों हेतु प्रपत्र- 'क' में आरोप उपायुक्त, राँची के पत्रांक- 8/गो०, दिनांक 13 जनवरी, 2010 द्वारा प्राप्त है।

प्रपत्र- 'क' में इनके विरुद्ध निम्नवत् आरोप प्रतिवेदित किये गये हैं:-

1. श्री अखिलेश्वर प्रसाद शुक्ला, अपर समाहर्ता, भूहदबन्दी, राँची-सह- निदेशक, लेखा प्रशासन एवं स्वनियोजन, जिला ग्रामीण विकास अभिकरण, राँची द्वारा सोनाहातु प्रखण्ड के विभिन्न योजनाओं की जाँच की गई। जाँच प्रतिवेदन (पत्रांक-268/भू0हद0 दिनांक 24 अक्टूबर, 2007) से स्पष्ट है कि सोनाहातु प्रखण्ड में योजना सं0 02/2005- 06 चेक डैम निर्माण की योजना ली गयी है। इसकी कुल प्राक्कलित राशि Rs.13,66,200/- के विरुद्ध Rs.10,95,000/- अग्रिम का भुगतान योजना अभिकर्ता योगेन्द्र प्रसाद सिंह, कनीय अभियंता को किया गया है। योजना के कार्य की मापी के अनुसार योजना पर व्यय की राशि Rs.8,62,500/- ही हुई है।

प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, सोनाहातु द्वारा उक्त योजना में भुगतान किए गए अग्रिम के संबंध में पत्रांक-613 (ii) दिनांक 10 दिसम्बर, 2007 द्वारा स्पष्ट किया गया है कि कार्य की महत्ता एवं सहायक अभियंता की अनुशंसा पर अग्रिम का भुगतान किया गया है।

प्रखण्ड विकास पदाधिकारी का अग्रिम की स्वीकृति के संदर्भ में दिया गया स्पष्टीकरण स्वीकार्य नहीं है। अग्रिम के भुगतान के क्रम में राज्य सरकार के निदेश की अवहेलना कर सरकारी राशि का दुरुपयोग किया गया है।

2. अपर समाहर्ता भू-हदबन्दी, राँची के जाँच प्रतिवेदन (पत्रांक-268/भू-हद0, दिनांक 24 अक्टूबर, 2007) के अनुसार योजना सं0-8/05-06 “देवेन सरना वृन्दा नाला पर चेक डैम निर्माण” योजना ली गयी है। इस योजना की कुल प्राक्कलित राशि Rs.14.50 लाख रुपये के विरुद्ध Rs.12.185 लाख रुपये अग्रिम की स्वीकृति योजना अभिकर्ता श्री योगेन्द्र प्रसाद सिंह, कनीय अभियंता को दी गयी है। योजना के कार्य की मापी के अनुसार निष्पादित कार्य की राशि Rs. 6.408 लाख रुपये ही है।

प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, सोनाहातु द्वारा अग्रिम के भुगतान के संबंध में पत्रांक- 613 (ii), दिनांक 10 दिसम्बर, 2007 के रूप में दिया गया स्पष्टीकरण स्वीकार्य नहीं है। स्पष्टीकरण में इस बात की उल्लेख है कि उन्होंने योजना में अग्रिम का भुगतान कार्य की प्रगति एवं सहायक अभियंता की अनुशंसा पर किया है। प्रखण्ड विकास पदाधिकारी द्वारा अग्रिम के भुगतान के क्रम में राज्य सरकार के निदेश को नजरअंदाज किया गया है, जो विभागीय निदेश की स्पष्टतः अवहेलना है। इनके द्वारा सरकारी राशि का अस्थायी दुरुपयोग किया गया है।

3. अपर समाहर्ता भू-हदबन्दी, राँची के जाँच प्रतिवेदन (पत्रांक-268/भू-हद0, दिनांक 24 अक्टूबर, 2007) के अनुसार योजना सं0-9/05-06 “देवेन सरना गाँव के कुल्हाटांड नाला पर चेक डैम निर्माण” योजना ली गयी है। इस योजना की कुल प्राक्कलित राशि Rs. 8.716 लाख रुपये के विरुद्ध Rs. 7.235

लाख रुपये अग्रिम का भुगतान अभिकर्ता श्री योगेन्द्र प्रसाद सिंह, कनीय अभियंता को किया गया है। कार्य की मापी के अनुसार निष्पादित कार्य की राशि Rs. 5.103 लाख रुपये ही है।

प्रखण्ड विकास पदाधिकारी द्वारा इस योजना में भी अग्रिम की स्वीकृति के क्रम में राज्य सरकार के निदेश की अनदेखी की गयी है, जो स्पष्ट: विभागीय निदेश की अवहेलना है। प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, सोनाहातु का इस संदर्भ में दिया गया स्पष्टीकरण पत्रांक- 613 (ii), दिनांक 10.12.2007 के रूप में प्राप्त है, जो स्वीकार्य नहीं है। इन्होंने स्पष्टीकरण में इस बात का उल्लेख है कि अग्रिम की स्वीकृति, कार्य की प्रगति एवं सहायक अभियंता की अनुशंसा के आलोक में दिया गया है।

प्रखण्ड विकास पदाधिकारी द्वारा अग्रिम के स्वीकृति के क्रम में राज्य सरकार के निदेश को नजरअंदाज किया गया है, जो स्पष्टतः विभागीय निदेश की अवहेलना है। इनके द्वारा सरकारी राशि का अस्थायी दुरुपयोग किया गया है।

4. श्री यतीन्द्र प्रसाद, सहायक परियोजना पदाधिकारी, डी0आर0 डी0ए0, राँची एवं श्री योगेन्द्र सिंह, सहायक अभियंता एन0आर0ई0पी0-1, राँची द्वारा संयुक्त रूप से सोनाहातु प्रखण्ड अन्तर्गत ली गयी विधायक कोष की योजना की जाँच की गयी है। पत्रांक-1134, दिनांक 27 दिसम्बर, 2007 के रूप में प्राप्त जाँच प्रतिवेदन से स्पष्ट होता है कि विधायक कोष की कुल 21 योजनाओं के कार्यान्वयन के लिए श्री योगेन्द्र प्रसाद सिंह, कनीय अभियंता को कुल Rs. 18,14,800/- रुपये अग्रिम का भुगतान किया गया है। स्वीकृत 21 योजनाओं में अब तक 10 योजना प्रारम्भ नहीं किया गया है। जाँच के क्रम में यह भी पाया गया है कि योजना से संबंधित अभिलेख का संधारण नियमानुसार नहीं किया गया है। योजना के साथ प्राक्कलन एवं मापी पुस्त संलग्न नहीं है। आदेश फलक पर दी गयी अग्रिम की पावती दर्ज नहीं है।

विधायक कोष की योजना “ग्राम भकुआडीह में 500 फीट में पी0सी0सी0 पथ” निर्माण योजना के प्राक्कलन में पथ की मोटाई 0’6” का प्रावधान है, जबकि निष्पादित कार्य में पथ की मोटाई 0’3” ही है।

इसी तरह मानकीडीह ग्राम के 900 फीट पी0सी0सी0 पथ निर्माण योजना में पथ का निर्माण 820 फीट ही किया गया है, जबकि मापी पुस्त में पथ लम्बाई 925 फीट दर्ज है।

उक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि प्रखण्ड विकास पदाधिकारी के द्वारा योजना के निर्माण कार्य में अपने दायित्व का निर्वहन नहीं किया गया है। योजना के निर्माण कार्य की प्रगति की वगैर समीक्षा

के योजना अभिकर्ता को अग्रिम का भुगतान किया गया है। प्रखण्ड विकास पदाधिकारी का उक्त कृत सरकारी निदेश के स्पष्टतः अवहेलना है एवं सरकारी राशि का दुरुपयोग है।

5. जिला लेखा पदाधिकारी, राँची से सोनाहातु प्रखण्ड के रोकड़ पंजी/वित्तीय संधारण की जाँच करायी गयी। जिला लेखा पदाधिकारी, राँची का जाँच प्रतिवेदन पत्रांक-34, दिनांक 30 दिसम्बर, 2007 के रूप में प्राप्त है। जाँच प्रतिवेदन के अनुसार प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, सोनाहातु द्वारा सोनाहातु प्रखण्ड रोकड़ संधारण में बोर्ड प्रकीर्ण नियमावली के नियम 324 325 एवं कोषागार नियमावली खंड-1 के नियम 86 (ii) का उल्लंघन किया गया है।

सामान्य रोकड़ का विचलन कर विचलित राशि को अभिश्रव के रूप में रखा गया है। अभिश्रव के संधारण विभिन्न प्रखण्ड कर्मियों को अग्रिम की स्वीकृति एवं भुगतान में कोषागार संहिता खंड-1 के नियम 213 से 261 एवं 611 का अनुपालन नहीं किया गया है। दिनांक 27 दिसम्बर, 2007 को जाँच के क्रम में सामान्य रोकड़ पंजी में आय-व्यय की प्रविष्टि का अभिप्रमाणन दिनांक 22 जनवरी, 2007 तक ही किया गया है। दिनांक 23 जनवरी, 2007 से प्रविष्टि का अभिप्रमाणन नहीं पाया गया। इसी तरह सहायक रोकड़ पंजियों में आय-व्यय की प्रविष्टि का अभिप्रमाणन अद्यतन नहीं पाया गया।

दिनांक 1 अप्रैल, 2006 से 26 अक्टूबर, 2007 तक की अवधि में कुल 7,09,700.78 रुपये का व्यय सामान्य रोकड़ का विचलन कर किया गया है, जो अभिश्रव के रूप में रखा गया है। उन्नीस माह के दौरान 7,09,700.78 रुपये की एक बड़ी राशि के विचलन का औचित्य जाँच के समय स्पष्ट नहीं किया गया।

अग्रिम रोकड़ पंजी में दिनांक 26 अक्टूबर, 2007 की प्रविष्टि पायी गयी एवं प्रखण्ड विकास पदाधिकारी द्वारा दिनांक 30 मार्च, 2006 तक की प्रविष्टि को अभिप्रमाणित किया गया। एक बड़ी राशि 6,40,045.00 रुपये का भुगतान अग्रिम के रूप में दिनांक 26 अक्टूबर, 2007 को विडियोग्राफर श्री सुरज कुमार साहू को किया गया है। इसी तरह श्री गोपाल कालिन्दी, प्रखण्ड कल्याण पदाधिकारी को दिनांक 5 दिसम्बर, 2007 को 15,04,390.00 रुपये अग्रिम का भुगतान किया गया है।

सोनाहातु प्रखण्ड के रोकड़ संधारण एवं संचालन में प्रखण्ड विकास पदाधिकारी द्वारा वित्तीय नियमों की अवहेलना की गयी है, जो कि गम्भीर वित्तीय अनियमितता है।

6. सोनाहातु प्रखण्ड के प्रखण्ड विकास पदाधिकारी तथा कनीय अभियंता श्री योगेन्द्र प्रसाद सिंह एवं कतिपय अन्य सरकारी कर्मचारियों द्वारा राँची शहर के जयश्री होटल में तथाकथित नरेगा योजनाओं के कार्यावंटन में हेरफेर करने एवं घूसखोरी संबंधी प्राप्त गुप्त सूचना पर निदेशानुसार अपर

समाहर्ता, विधि व्यवस्था, राँची तथा अनुमण्डल पदाधिकारी, बुण्डू द्वारा जयश्री होटल में छापामारी की गई एवं इसी आलोक में अनुमण्डल पदाधिकारी, बुण्डू द्वारा समर्पित जाँच प्रतिवेदन पत्रांक-105/गो0 दिनांक 12 अप्रैल, 2008 के अनुसार कमरा नं0-204 में प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, सोनाहातु एवं अन्य 12 पंचायत सेवकों को पाया गया। इसके अतिरिक्त कमरा के बाहर 5 व्यक्तियों को पाया गया जो सोनाहातु प्रखण्ड के रहने वाले थे एवं योजनाओं से जुड़े अभिकर्ता प्रतीत हुए।

प्रतिवेदन में स्पष्ट अंकित है कि जयश्री होटल का कमरा नं0-204 श्री योगेन्द्र प्रसाद सिंह, कनीय अभियंता, सोनाहातु के नाम से दिनांक 11 अप्रैल, 2008 को आरक्षित किया गया था। तलाशी में सभी पदाधिकारियों कर्मचारियों एवं तथाकथित अभिकर्ताओं के पास से कुल 4440000 प्राप्त हुए। इसके अतिरिक्त योजनाओं से संबंधित कागजात और दस्तावेजों का भी व्योरा अनुमण्डल पदाधिकारी के प्रतिवेदन में अंकित है। उक्त कमरे में कनीय अभियंता श्री योगेन्द्र प्रसाद सिंह उपस्थित नहीं हुए, किन्तु सभी उपस्थित कर्मचारियों का यह बयान था कि वे कनीय अभियंता के कहने पर ही कमरे में आये थे। अभिकर्ताओं का यह कहना था कि ये लोग योजना प्राप्त करने या योजना का अग्रिम प्राप्त करने के दृष्टिकोण से आए थे।

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि प्रखण्ड विकास पदाधिकारी सोनाहातु द्वारा प्रखण्ड विकास मुख्यालय में अवस्थित कार्यालय में कार्य न कर जिला मुख्यालय के किसी होटल के कमरे में कार्य किया जाना निश्चित रूप से अनुशासनहीनता कर्तव्यहीनता एवं प्रखण्ड स्तरीय शीर्षस्थ अभियंता के दायित्व का निर्वहन नहीं करने तथा कर्तव्य में पारदर्शिता का अभाव को स्पष्टतः दर्शाता है।

उक्त आरोपों के लिए विभागीय संकल्प सं0-3442, दिनांक 11 जून, 2010 द्वारा श्री डांग के विरुद्ध विभागीय कार्यवाही संचालित की गयी एवं श्री डी0 के0 तिवारी, भा0प्र0से0, सचिव, स्वास्थ्य, चिकित्सा शिक्षा एवं परिवार कल्याण विभाग, झारखण्ड को संचालन पदाधिकारी नियुक्त किया गया। विभागीय संकल्प सं0-8582, दिनांक 30 दिसम्बर, 2011 द्वारा संचालन पदाधिकारी बदलते हुए इनके स्थान पर श्री अशोक कुमार सिन्हा, सेवानिवृत्त भा0प्र0से0, विभागीय जांच पदाधिकारी, झारखण्ड, टाऊन एडमिनीशट्रेशन बिल्डिंग, एच.ई.सी., गोलचक्कर, धुर्वा, राँची को संचालन पदाधिकारी नियुक्त किया गया।

इसी बीच, उपायुक्त, राँची के पत्रांक- 143(i)/जि0ग्रा0, दिनांक 7 मई, 2012 द्वारा श्री डांग के विरुद्ध पुनः अतिरिक्त आरोप पत्र प्रपत्र- 'क' में प्राप्त हुआ, जिसमें इनके विरुद्ध निम्न आरोप प्रतिवेदित किये गये हैं:-

1. अनुमंडल पदाधिकारी बुण्डू के पत्रांक-404 (ii) दिनांक 30 मई, 2009 द्वारा समर्पित प्रतिवेदन के अनुसार आपके पदस्थापन काल में आपके द्वारा कार्यान्वित मनरेगा के निम्न योजना के कार्यान्वयन में अनियमितता एवं राशि का दुरुपयोग पाया गया है:-

(i) मुख्यालय पक्की सड़क से बुकरूडीह तक ग्रेड-1 पथ निर्माण, योजना सं0-38/07-08, योजना कोड सं0-0708190060

(ii) पक्की सड़क से सारमाली होते हुए बुकरूडीह तक 3.5 कि0मी0 ग्रेड-1 पथ, योजना सं0-04/07-08 योजना कोड सं0-0708190060

अनुमंडल पदाधिकारी, बुण्डू द्वारा मुख्यालय पक्की सड़क से बुकरूडीह तक ग्रेड-1 पथ निर्माण, योजना सं0-3838 का निरीक्षण/स्थलीय जाँच दिनांक 13 मई, 2009 को किया गया है। अभिलेख के अवलोकन से पता चलता है कि इस योजना का कोड सं0-0708190060 है और इसके लिए लाभुक समिति का गठन कर श्री लोहरा महतो, अध्यक्ष एवं श्री रविन्द्र नाथ महतो को सचिव बनाया गया है। कार्यादेश दिनांक 14 फरवरी, 2008 को निर्गत किया गया है। इस योजना के प्राक्कलित राशि 21,91,400/- रुपये है, जिसके विरुद्ध 3,25,000/- रुपये भुगतान किया गया है, भुगतान के अनुरूप अभिलेख अथवा कार्यालय में मापी पुस्त उपलब्ध नहीं और न ही कोई मस्टर रोल उपलब्ध है।

स्थलीय जाँच के क्रम में पता चला कि इसमें कुछ कार्य किया गया है, परन्तु मिट्टी डालने के उपरान्त इस पर रोलर नहीं चलाया गया है तथा बेतरतीब ढंग से जहाँ-तहाँ छीट दिया गया है। अभिलेख में प्राक्कलन उपलब्ध नहीं है, परन्तु जिला द्वारा स्वीकृत्यादेश में इसकी लम्बाई 3.5 कि0मी0 दर्शायी गयी है। किन्तु कार्य स्थल पर मापी के उपरान्त इसकी लम्बाई 2.80 कि0मी0 ही आती है।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि प्राक्कलन वास्तविक लम्बाई से अधिक का बनाया गया है।

2. जाँच के क्रम में यह तथ्य भी सामने आया है कि इस पथ को बारूहातु पंचायत द्वारा भी योजना सं0-04/07-08 के तहत स्वीकृत करा दिया गया है एवं इसके लिए भी वही योजना कोड सं0-0708190060 दर्शाया गया है तथा योजना का नाम पक्की सड़क से सारमाली होते हुए बुकरूडीह तक 3.5 कि0मी0 ग्रेड-1 पथ निर्माण दिया गया है। इस योजना की भी प्राक्कलित राशि 21,91,400/- रुपये दिखाया गया है। इसके लिए भी दिनांक 25 जनवरी, 2008 को लाभुक समिति के चयनार्थ आम सभा की गयी तथा प्राक्कलित राशि के विरुद्ध 3,07,500/- रुपये लाभुक समिति के अध्यक्ष, श्री मोहर मोहली एवं सचिव, श्री धनेश्वर महतो को भुगतान किया जा चुका है। अभिलेख के साथ एक मापी पुस्तिका संलग्न है, जो कनीय अभियंता श्री योगेन्द्र प्रसाद सिंह के द्वारा हस्ताक्षरित है। इसमें प्रथम विपत्र

2,41,141/- रुपये का दिया गया है। अभिलेख में एक भी मस्टर रोल उपलब्ध नहीं है। योजना स्थल पर नाम मात्र का कार्य दिखाई देता है।

इस तरह आप पर आरोप है कि यह योजना सरकारी राशि के दुरुपयोग को दर्शाता है, क्योंकि एक पथ की स्वीकृति जिला द्वारा निर्गत एक योजना कोड के तहत दोनों स्तरों यथा प्रखण्ड एवं पंचायत से दी गयी है तथा इसके लिए अलग-अलग अभिलेख/प्राक्कलन तथा आम सभा लाभुक समिति को चयन किया गया है। एक ही पथ का दो एजेंसियों से अलग-अलग प्राक्कलन पर एक ही समय कार्य किया जाना योजना का Duplication है तथा सरकारी राशि का घोर दुरुपयोग है।

श्री अशोक कुमार सिन्हा, सेवानिवृत्ति भा0प्र0से0, विभागीय जाँच पदाधिकारी-सह-संचालन पदाधिकारी के पत्रांक-202, दिनांक 31 मई, 2013 द्वारा श्री डांग के विरुद्ध विभागीय कार्यवाही संचालित कर जाँच प्रतिवेदन समर्पित किया गया, जिसमें श्री डांग के विरुद्ध सभी आरोप प्रमाणित पाये गये हैं।

विभागीय पत्रांक-6295, दिनांक 12 जुलाई, 2013 द्वारा श्री डांग से द्वितीय कारण पृच्छा की गयी। श्री डांग के पत्रांक-320/स्था0, दिनांक 16 जुलाई, 2014 द्वारा द्वितीय कारण पृच्छा का जवाब समर्पित किया गया है, जिसमें उनके द्वारा कोई नया तथ्य समर्पित नहीं किया गया है।

इस प्रकार, श्री डांग के विरुद्ध प्रतिवेदित आरोप, इनसे प्राप्त स्पष्टीकरण, संचालन पदाधिकारी के जाँच प्रतिवेदन एवं इनके द्वारा समर्पित द्वितीय कारण पृच्छा के जवाब की समीक्षा की गई। सम्यक् समीक्षोपरान्त श्री डांग के विरुद्ध प्रमाणित आरोपों के लिए निम्नांकित दण्ड उनपर अधिरोपित किया जाता है:-

- (1) चार वेतनवृद्धियों पर संचयात्मक प्रभाव से रोक;
- (2) निन्दन;

झारखण्ड राज्यपाल के आदेश से,

प्रमोद कुमार तिवारी,

सरकार के उप सचिव।

झारखण्ड राजकीय मुद्रणालय, राँची द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित,

झारखण्ड गजट (असाधारण) 499-50 ।